तृतीय श्रेणी अध्यापक भर्ती परीक्षा टेस्ट सीरिज 2.0–2025

Level-2 (SST)

Solution Minor Test-01

KALAM ACADEMY, SIKAR

3rd Grade Test Series-2025 (2.0) L-2_SST Minor - 01 [Revised_ANSWER KEY] HELD ON : 28/09/2025

Q.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
Ans.	1	1	3	4	3	1	3	2	1	4	3	2	2	3	1	2	2	2	1	2
Q.	**21**	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**	**31**	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
Ans.	3	1	2	3	3	1	4	3	1	4	4	2	2	2	1	1	4	3	4	2
Q.	**41**	**42**	**43**	**44**	**45**	**46**	**47**	**48**	**49**	**50**	**51**	**52**	**53**	**54**	**55**	**56**	**57**	**58**	**59**	**60**
Ans.	4	4	3	4	1	4	4	4	3	4	2	3	4	2	3	2	1	4	4	4
Q.	**61**	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**	**71**	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
Ans.	4	3	3	4	3	1	2	2	1	2	2	2	4	2	3	4	4	3	2	3
Q.	**81**	**82**	**83**	**84**	**85**	**86**	**87**	**88**	**89**	**90**	**91**	**92**	**93**	**94**	**95**	**96**	**97**	**98**	**99**	**100**
Ans.	3	2	3	1	4	3	4	3	3	4	2	3	1	3	2	3	3	1	2	3
Q.	**101**	**102**	**103**	**104**	**105**	**106**	**107**	**108**	**109**	**110**	**111**	**112**	**113**	**114**	**115**	**116**	**117**	**118**	**119**	**120**
Ans.	2	1	1	4	1	3	4	1	1	1	2	3	1	4	4	4	3	4	3	2
Q.	**121**	**122**	**123**	**124**	**125**	**126**	**127**	**128**	**129**	**130**	**131**	**132**	**133**	**134**	**135**	**136**	**137**	**138**	**139**	**140**
Ans.	1	3	1	1	1	3	3	2	2	3	4	1	1	4	2	4	2	1	1	1
Q.	**141**	**142**	**143**	**144**	**145**	**146**	**147**	**148**	**149**	**150**										
Ans.	4	4	3	1	4	4	3	4	3	3										

1. Ans. (1)

आंतरिक अभिप्रेरण	बाह्य अभिप्रेरण
1. इसका स्रोत मनुष्य के भीतर होता है।	1. इसका स्रोत कोई बाहरी तत्व होता है।
2. ऐसे अभिप्रेरण को प्रत्यक्ष रूप से बाहर से देखा नहीं जा सकता।	2. ऐसे अभिप्रेरण को बाहर से देखा जा सकता है।
3. यह व्यक्ति को कार्य केन्द्रित रखता है।	3. यह व्यक्ति को लक्ष्य केन्द्रित रखता है।
4. उपलब्धि की आवश्यकता, संबंधन की आवश्यकता, आकांक्षा स्तर आंतरिक अभिप्रेरण के कुछ उदाहरण हैं।	4. पुरस्कार, दण्ड, धन, दोषारोपण, प्रतिद्वन्द्विता, परिणाम का ज्ञान, प्रशंसा आदि बाह्य अभिप्रेरण के उदाहरण है।

2. Ans. (1)

जैविक	मनोसामाजिक
ये अभिप्रेरण के सहज (अंतर्जात) जैविक कारकों, जैसे हार्मोन, तंत्रिका संचारक, मस्तिष्क संरचना (अधश्चेतक, उपवल्कुटीय तंत्र Hypothalamus & Limbic System) इत्यादि पर फोकस करते हैं।	ये अभिप्रेरणा के मनोवैज्ञानिक सामाजिक, पर्यावरणीय कारकों व उसकी परस्पर अंत: क्रिया से संबंध रखते हैं जिससे अभिप्रेरण उत्पन्न होता है।
उदाहरण: भूख, प्यास, काम अभिप्रेरक, मलमूत्र त्याग	**उदाहरण :** उपलब्धि, संबंधन, शक्ति, जिज्ञासा, अन्वेषण और आत्मसिद्धि अभिप्रेरक की आवश्यकताएँ।
यह जन्मजात होते है और जीवित रहने के लिए आवश्यक होते हैं। (शरीर क्रियात्मक/शारीरिक अभिप्रेरक)	यह जन्मजात नहीं होते (अर्जित अथवा सीखे हुए होते हैं) और जीवित रहने के लिए आवश्यक नहीं होते।
यह सार्विक होते हैं। देश-काल की समरूपता होती है। (Universal)	यह सार्विक नहीं होते।
इसमें व्यक्ति में समस्थिति बनाने का गुण होता है। (Homeostasis = संतुलित शारीरिक स्थिति)	समस्थिति से इनका कोई संबंध नहीं होता।
अभिप्रेरकों की अभिव्यक्ति में एक ही प्रजाति के सभी सदस्यों में समरूपता होती है।	इनके अभाव में व्यक्ति जैविक रूप से तो जीवित रह सकता है किन्तु सामाजिक रूप से उसका जीवित रहना संभव नहीं है।
अभिप्रेरक क्षुब्ध आंतरिक संतुलन के प्रति प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है।	इन्हें सामाजिक इसलिए कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति इन्हें सामाजिक परिस्थितियों जैसे परिवार, पड़ोस, स्कूल, कॉलेज, साथियों आदि के बीच रहकर सीखता है।

3. Ans. (3)

- Maslow का मानना था कि आवश्यकता-श्रृंखला (hierarchy) पूर्णत: कठोर (rigid) नहीं है और कभी भी एक स्तर छोड़कर दूसरा स्तर सक्रिय हो सकता है।

4. Ans. (4)

- अभिप्रेरणा एक आंतरिक अवस्था है जो काल्पनिक होती है।
- यह किसी खास क्रिया को करने की ओर दिशा निर्देशित होती है।
- अभिप्रेरणा के फलस्वरूप व्यक्ति में कुछ क्रियाएँ उत्पन्न होती हैं।
- यह एक **अनुमानित प्रक्रिया** है।

5. Ans. (3)

- गुड के अनुसार कार्य को आरंभ करने, जारी रखने व नियमित करने की प्रक्रिया ही अभिप्रेरणा है।

6. Ans. (1)

- अभिप्रेरणा = आवश्यकता + अन्तर्नोद + उद्दीपक

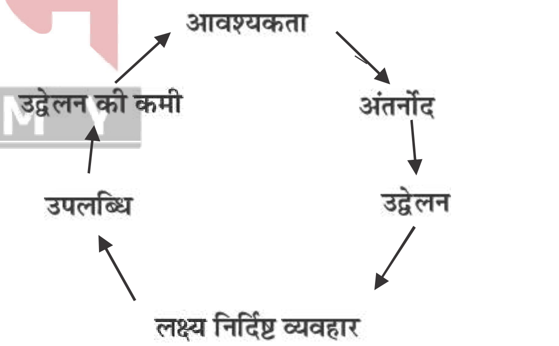

7. Ans. (3)

- **अनुमोदन अभिप्रेरक (Approval Motive) :** व्यक्ति द्वारा धनात्मक मूल्यांकन प्राप्त करने की आकांक्षा ही अनुमोदन अभिप्रेरण है। 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चे माता-पिता से अनुमोदन प्राप्त करते हैं। विद्यालय अवस्था में उनके अनुमोदन का स्रोत शिक्षक व मित्र बन जाते हैं। किशोरावस्था में साथियों का अनुमोदन प्रबल होता है।

8. Ans. (2)

- शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र सामान्य मनोविज्ञान की तुलना में सीमित है। यह मनोविज्ञान की प्रयोगात्मक शाखा होती है।

कलाम ACADEMY

9. Ans. (1)

शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र-
- शिक्षार्थी
- सीखने की परिस्थितियाँ
- सीखने की प्रक्रिया का अध्ययन
- मापन मूल्यांकन सम्बन्धी अध्ययन
- निर्देशन तथा मानसिक स्वास्थ्य
- शिक्षक

10. Ans. (4)

- ट्रो के अनुसार शिक्षा नियन्त्रित वातावरण में मानव विकास की प्रक्रिया है।

11. Ans. (3)

- यह वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करता है।
- यह शिक्षक अधिगमकर्त्ता एवं शिक्षण प्रक्रिया से संबंधित है।
- यह विविध अधिगमकर्त्ता के लिए उपयुक्त होती है।
- यह उपयुक्त शिक्षण विधियों के चयन में उपयोगी है।

12. Ans. (2)

- वुडवर्थ के अनुसार सबसे पहले मनोविज्ञान ने अपनी **आत्मा** का त्याग किया। फिर उसने अपने **मन** या मस्तिष्क का त्याग किया। उसके बाद उसने **चेतना** का त्याग किया। अब वह **व्यवहार** की विधि को स्वीकार करता है।''

13. Ans. (2)

- क्रो एण्ड क्रो के अनुसार, ''मनोविज्ञान सीखने से संबंधित मानव विकास के 'कैसे' की व्याख्या करता है, शिक्षा सीखने के 'क्या' को प्रदान करने की चेष्टा करती हैं। शिक्षा-मनोविज्ञान सीखने के 'क्यों' और 'कब' से सम्बन्धित हैं।''

14. Ans. (3)

क्र.सं. (S.No.)	मूल प्रवृत्ति (Instinct)	संवेग (Emotion)
1.	पलायन (Escape)	भय (Fear)
2.	युयुत्सा (Combat)	क्रोध (Anger)
3.	निवृत्ति (Repulsion)	घृणा (Disgust)
4.	सन्तान कामना (Parental)	वात्सल्य (Tenderness)
5.	शरणागति (Appeal)	करुणा (Distress)
6.	कामवृत्ति (Sex)	कामुकता (Lust)
7.	जिज्ञासा (Curiosity)	आश्चर्य (Wonder)
8.	दैन्य (Submission)	आत्महीनता (Negative Self-Feeling)
9.	गौरव (Assertion)	आत्माभिमान (Positive Self-Feeling)
10.	सामूहिकता (Gregariousness)	एकाकीपन (Loneliness)
11.	भोजनान्वेषण (Food Seeking)	भूख (Hunger)
12.	संग्रहण (Acquistion)	स्वामित्व (Ownership)
13.	रचनात्मकता (Construction)	कृतिभव (Creation)
14.	हास (Laughter)	आमोद (Amusement)

15. Ans. (1)

शरीर क्रिया सिद्धांत (Physiological Theory) :
- इस सिद्धान्त के प्रतिपादक मॉर्गन हैं। मॉर्गन के अनुसार प्राणी की प्रतिक्रियाएँ किसी बाह्य उद्दीपन पर निर्भर नहीं होती वरन केन्द्रीय प्रेरक स्थिति द्वारा संचालित होती है।

16. Ans. (2)

- कुछ भाषा वैज्ञानिकों ने राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति के संबंध में अपभ्रंश के विभिन्न रूपों की कल्पना की है। जो निम्नलिखित है–

मत	भाषा वैज्ञानिक
मरुगुर्जरी अपभ्रंश	डॉ. के.एम.मुंशी, श्री देवरिया, हीरालाल माहेश्वरी एवं मोतीलाल मेनारिया
सौराष्ट्री अपभ्रंश	सुनीति कुमार चटर्जी
नागर अपभ्रंश	डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन, डॉ. पुरूषोत्तम मेनारिया

कलाम ACADEMY

17. Ans. (2)

मारवाड़ी की उपबोलियाँ-

- मारवाड़ी बोली की उपबोलियों में मेवाड़ी, बागड़ी, बीकानेरी, शेखावाटी, नागौरी, खैराड़ी, गोडवाड़ी, ढटकी, थली, देवड़ावाटी आदि शामिल हैं।

उपबोली	क्षेत्र
थली	उत्तरी राजस्थान
ढाटी	बाड़मेर
गोडवाड़ी	जालौर, पाली, सिरोही
देवड़ावाटी	सिरोही
खैराड़ी	शाहपुरा (भीलवाड़ा)

18. Ans. (2)

- मालवी बोली राजस्थान के झालावाड़, कोटा, प्रतापगढ़ के कुछ भाग में बोली जाती है। यह कोमल व मधुर बोली है।
- नागरचोल- यह ढूँढ़ाड़ी बोली की उपबोली है जो हाड़ौती के उत्तर में बोली जाती है, जो टोंक व सवाईमाधोपुर क्षेत्र में बोली जाती है।
- धावड़ी- यह मेवाड़ी भाषा की उपबोली है, जो उदयपुर में बोली जाती है।
- अहीरवाटी- यह बोली अलवर के कुछ क्षेत्र तथा बहरोड़, कोटपुतली व मुंडावर में बोली जाती है।

19. Ans. (1)

डिंगल-

- डिंगल पर गुजराती का प्रभाव था तो पिंगल ब्रज भाषा से प्रभावित थी।
- डिंगल शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कवि बांकीदास ने अपनी रचना कुकवि बत्तिसी में किया है।
- यह पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी) का साहित्यिक रूप/काव्य शैली है।
- इसका विकास गुर्जरी अपभ्रंश से हुआ है।
- प्रमुख ग्रंथ ढोला मारू रा दुहा, अचलदास खींची री वचनिका, राजरूपक, राव जैतसी रो छंद, रूकमणि हरण, नाग दमण, सगत रासौ, वीर सतसई, वेलि क्रिसन रूकमणी री आदि।

20. Ans. (2)

- राजस्थानी भाषा दिवस प्रतिवर्ष 21 फरवरी को मनाया जाता है।

21. Ans. (3)

प्रधानमंत्री किसान उत्सव दिवस का राज्य स्तरीय समारोह

- 2 अगस्त को बाँसवाड़ा में प्रधानमंत्री किसान उत्सव दिवस के राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन किया गया।
- इस अवसर पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के जरिए निम्न विकास कार्यों का लोकार्पण व शिलान्यास किया-

  (i) सिकराय (दौसा) में पपीता उत्कृष्टता केन्द्र का शिलान्यास।

  (ii) देवड़ावास (टोंक) में मधुमक्खी पालन उत्कृष्टता केन्द्र का शिलान्यास।

  (iii) खेमरी (धौलपुर) में उद्यानिकी ग्राह्य परीक्षण केन्द्र का लोकार्पण।

22. Ans. (1)

हर घर तिरंगा अभियान

- भारत सरकार के निर्देशानुसार प्रदेश में 2 अगस्त से 15 अगस्त 2025 तक तीन चरणों में "हर घर तिरंगा अभियान" का आयोजन किया गया।
- पंचायतीराज विभाग इस अभियान का नोडल विभाग है।
- राजस्थान ने इस वर्ष हर घर तिरंगा अभियान में 2.80 लाख वॉलिंटियर्स की सक्रिय भागीदारी के साथ राष्ट्रीय स्तर पर **द्वितीय स्थान** प्राप्त किया है।

23. Ans. (2)

राज्य स्तरीय जनगणना समन्वय समिति

- राजस्थान राज्य में जनगणना 2027 के सुव्यवस्थित व सफल क्रियान्वयन हेतु राज्यपाल द्वारा मुख्य सचिव **सुधांश पंत** की अध्यक्षता में **राज्य स्तरीय जनगणना समन्वय समिति** का गठन किया गया।
- **सांख्यिकी विभाग** इस समिति का प्रशासनिक विभाग है।

24. Ans. (3)

- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा देशभर के 45 टीचर्स को शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) पर राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार हेतु राजस्थान की शिक्षिका **नीलम यादव** का भी चयन किया गया।

25. Ans. (3)

- 23 से 31 अगस्त तक चेक गणराज्य में आयोजित 'पैरा आर्चरी वर्ल्ड रैंकिंग टूर्नामेंट' में राजस्थान के खिलाड़ी श्याम सुन्दर स्वामी व धनाराम गोदारा ने स्वर्ण पदक जीता।

26. Ans. (1)

राजीविका एवं EESL के मध्य MOU

- 22 अगस्त, 2025 को राजीविका एवं एनर्जी एफिशिएंसी लिमिटेड (EESL) के मध्य नवीकरणीय ऊर्जा और आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए MOU हुआ है।

27. Ans. (4)

- यहाँ से मौर्यकाल और उत्तरवर्ती काल के अवशेष मिलते हैं। यहाँ से अशोकालीन ब्रह्म लिपि की अक्षर युक्त ईंटें प्राप्त हुई हैं।
- गोपीनाथ शर्मा के अनुसार इन बौद्ध स्तूपों को अशोक के समय **हूण शासक मिहिरकुल** द्वारा 510-540 ई. के मध्य बैराठ पर आक्रमण के समय तोड़ा गया जो हीनयान सम्प्रदाय से संबंधित प्राचीनतम स्थापत्य माना जाता है।

28. Ans. (3)

सोमेश्वर-

- बिजौलिया अभिलेख (1169-1170 ई.) का उत्कीर्ण सोमेश्वर चौहान के समय में हुआ। इस लेख में सोमेश्वर को **प्रतापंलकेश्वर** कहा गया है।
- सोमेश्वर ने कोंकण के मल्लिकार्जुन को परास्त किया।

29. Ans. (1)

- रणथम्भौर के चौहान वंश का संस्थापक पृथ्वीराज तृतीय का पुत्र गोविन्दराज (1194 ई.) था जो कुतुबुद्दीन ऐबक का समकालीन था।
- गोविंदराज के उत्तराधिकारी क्रमश: वाल्हण, प्रल्हादन तथा वीर नारायण थे।

30. Ans. (4)

जवाहरसिंह-

- महाराजा सूरजमल के पुत्र जवाहरसिंह (1765-1768) ने मल्हारराव होल्कर की सहायता से रूहेला सरदार नजीबुद्दौला को 1764 ई. में पराजित किया।
- 1766 ई. में जवाहरसिंह ने होल्कर को पराजित कर धौलपुर पर अधिकार कर लिया।
- 1767 ई. में जवाहर सिंह तथा सवाई माधोसिंह के मध्य मांडवा/कामां का युद्ध हुआ।

31. Ans. (4)

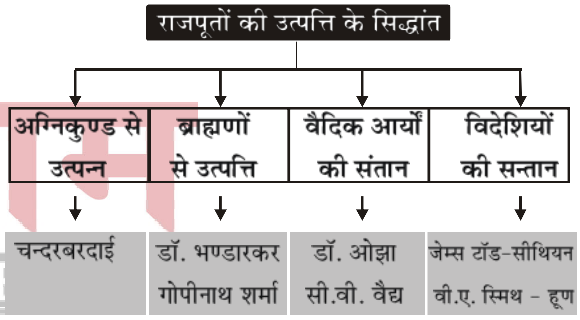

32. Ans. (2)

- आबू के परमार वंश का संस्थापक 'धूमराज' था लेकिन इनकी वंशावली उत्पलराज से प्रारंभ होती है।
- धारावर्ष (1163-1219 ई.) आबू के परमारों का एक शक्तिशाली शासक था। इसने मोहम्मद गौरी के विरूद्ध युद्ध में गुजरात की सेना का सेनापतित्व किया।

33. Ans. (2)

- वागड़ के परमारों की राजधानी वर्तमान बांसवाड़ा जिले में स्थित अर्थूणा थी।
- परमार शासक चामुण्डराय ने 1079 ई. में अर्थूणा में मण्डलेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।

34. Ans. (2)

- 1650 ई. में धर्मपाल द्वितीय ने करौली को अपनी राजधानी बनाया।
- करौली के यादव वंश की स्थापना विजयपाल द्वारा 1040 ई. में की गयी। इसने बयाना (भरतपुर) को अपनी राजधानी बनाया।
- 1348 ई. में अर्जुनपाल ने कल्याणपुर बसाया, जिसे वर्तमान में करौली के नाम से जाना जाता है।
- करौली महाराजा हरबक्षपाल ने 9 नवम्बर, 1817 ई. को अंग्रेजों से संधि कर उनकी अधीनता स्वीकार कर ली।

35. उत्तर (1)

व्याख्या-

- अकबरकालीन टकसाल बैराठ से मिली है।
- दौहरी पेचदार शिरावाली पिन गणेश्वर सभ्यता से मिली है।
- बेलनाकार तंदूर कालीबंगा से मिली है।

36. उत्तर (1)

व्याख्या-

- जाट राजवंश के शासकों का काल क्रम निम्नानुसार है-
  - गोकुला जाट
  - राजाराम
  - चूड़ामन
  - सूरजमल

37. उत्तर (4)

व्याख्या-

- कालीबंगा की खोज **अमलानंद घोष** ने 1952 में की।
- आहड़ की खोज 1953 में **अक्षय कीर्ति व्यास** ने की।
- गणेश्वर की खोज **रतनचंद्र अग्रवाल** ने की।
- बालाथल का सर्वप्रथम उत्खनन 1993 में वी.एन. मिश्र ने किया।

38. उत्तर (3)

व्याख्या-

- कालीबंगा से बेलनाकार मुहरें, भूकम्प के प्राचीनतम साक्ष्य और लाल रंग के मिट्टी के बर्तन मिले हैं।
- कालीबंगा से मातृदेवी की मूर्तियाँ नहीं मिली हैं।

39. उत्तर (4)

व्याख्या-

आहड़ संस्कृति के उत्खन्न स्थल

स्थल	जिला
आहड़, बालाथल, भगवानपुरा, महाराज की खेड़ी	उदयपुर
गिलूंड, पछमता	राजसमंद
ओझियाना, छतरी खेड़ा	भीलवाड़ा

40. उत्तर (2)

व्याख्या-

- आहड़ सभ्यता का उत्खनन तीन चरणों में किया गया, जिसमें उत्खनन के आठ स्तरों का पता चला है। जिसमें चतुर्थ स्तर से ताँबे की दो कुल्हाड़ियां प्राप्त हुई है।
- आहड़ सभ्यता से संयुक्त परिवार प्रथा के अवशेष मिले हैं।
- आहड़ सभ्यता के लोग मृदभाण्डों को उल्टी तपाई तकनीक का प्रयोग करके बनाते थे।
- आहड़ सभ्यता एक ग्रामीण सभ्यता है, जबकि हड़प्पा सभ्यता नगरीय सभ्यता थी।

41. उत्तर (4)

व्याख्या-

- बालाथल सभ्यता से पांच लौहा गलाने की भट्टियां, मिट्टी के सांड की आकृति, हाथ से बुने हुए कपड़े का टुकड़ा मिला है।
- उत्तर गुप्तकालीन शंखलिपि के साक्ष्य बैराठ सभ्यता से मिले हैं।

42. उत्तर (4)

व्याख्या-

- बालाथल सभ्यता से चार हजार वर्ष पुराना कुष्ठ रोग का सबसे पुरातन प्रमाण मिला है। यहां से अपरिष्कृत मृदभाण्ड मिले हैं।
- बालाथल सभ्यता ताम्रपाषाणिक व लौहयुगीन थी।

43. उत्तर (3)

व्याख्या-

- अलाउद्दीन खिलजी ने 1311 में कान्हड़देव को हराकर जालौर दुर्ग पर अधिकार कर लिया तथा जालौर दुर्ग का नाम बदलकर जलालाबाद कर दिया।

कलाम ACADEMY

44. उत्तर (4)

व्याख्या-

- जैसलमेर का किला इतिहास में 'ढ़ाई साके' के लिए प्रसिद्ध है।

1. **पहला साका** - जैसलमेर के शासक मूलराज के समय हुआ, जब अलाउद्दीन खिलजी ने जैसलमेर पर आक्रमण किया था।
2. **दूसरा साका** - रावल दूदा के समय फिरोजशाह तुगलक ने आक्रमण किया।
3. **अर्द्ध साका** - राव लूणकरण के शासनकाल 1550 ई. में कंधार शासक अमीर अली ने आक्रमण किया। लूणकरण अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा गया, किंतु अंतिम रूप से भाटी विजयी रहे, अत: जौहर नहीं हुआ।

45. उत्तर (1)

व्याख्या-

- कालीबंगा सभ्यता से उत्खनन के पांच स्तर प्राप्त हुए है। जिनमें से प्रथम दो स्तरों से प्राक् हड़प्पा सभ्यता के अवशेष मिलें है। अंतिम तीन स्तरों से हड़प्पाकालीन अवशेष मिलें है।
- कालीबंगा सभ्यता हनुमानगढ़ जिला मुख्यालय से दक्षिण-पश्चिम दिशा में स्थित है।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण नई दिल्ली के निर्देशन में 1961-62 में बी.बी. लाल तथा बी.के. थापर द्वारा कालीबंगा का उत्खनन करवाया गया।

46. उत्तर (4)

व्याख्या-

- सोमदेव कृत ललित विग्रहराज के अनुसार विग्रहराज चतुर्थ ने गजनी के खुसरो शाह को परास्त किया।
- विग्रहराज चतुर्थ ने दिल्ली के तोमरों को परास्त कर दिल्ली पर अधिकार किया।
- विग्रहराज चतुर्थ ने अपना लेख फिरोजशाह की लाट पर उत्कीर्ण करवाया।
- विग्रहराज चतुर्थ का काल चौहानों का स्वर्णकाल माना जाता है।

47. Ans. (4)

जोधपुर-

1. केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड
2. भेड़ रोग अनुसंधान प्रयोगशाला
3. केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी)
4. शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी)
5. राज्य सुदूर संवेदन अनुप्रयोग केन्द्र
6. अखिल भारतीय समन्वित बाजरा सुधार परियोजना
7. ईसबगोल अनुसंधान केन्द्र
8. राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो (NBPGR) का प्रादेशिक केन्द्र
9. मरुस्थलीय औषधि अनुसंधान केन्द्र/राष्ट्रीय असंचारी रोग कार्यान्वयन अनुसंधान केन्द्र
10. मरुस्थलीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र
11. डिफेंस लेबोरेट्री
12. भारतीय हथकरघा प्रौद्योगिकी संस्थान
13. रुपायन शोध संस्थान, बोरुन्दा
14. राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान
15. राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी

48. Ans. (4)

काजरी-

- यह भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का एक घटक है जोकि जोधपुर में स्थित है।
- यूनेस्को विशेषज्ञ एवं कॉमनवेल्थ वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान संगठन, ऑस्ट्रेलिया के डॉ. सी. एस. क्रिशचियन की सलाह पर 1 अक्टूबर 1959 को DASCS का नाम बदलकर **केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI)** कर दिया गया।
- 1966 में इस संस्थान को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अधीन कर दिया गया।
- **फील्ड स्टेशन**- भोपालगढ़, कायलाना, बेरीगंगा, जाडन, चांदन।

कलाम ACADEMY

49. Ans. (3)

केन्द्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान

- **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्** के द्वारा केन्द्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान की स्थापना **1962 में मालपुरा (टोंक)** में की गई जो कि अब अविकानगर के नाम से लोकप्रिय है।
- इसी परिसर में भारतीय घास भूमि एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झाँसी का पश्चिमी क्षेत्र अनुसंधान केन्द्र (WRRS) अविकानगर स्थित है जिसकी स्थापना 21 सितंबर 1987 को हुई थी।

50. Ans. (4)

सरसों अनुसंधान निदेशालय

- सातवीं योजना (1992-97) के दौरान **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्** ने 1990 में गठित कार्यबल की सिफारिश के आधार पर राज्य कृषि विभाग, राजस्थान सरकार के अनुकूलन परीक्षण केन्द्र, सेवर (भरतपुर) में राई-सरसों पर अनुसंधान करने के लिए **20 अक्टूबर 1993** को **राष्ट्रीय राई-सरसों अनुसंधान केन्द्र (NRCRM)** की स्थापना की। ग्यारहवीं योजना (2007-2012) में फरवरी 2009 में इस केन्द्र का नाम बदलकर **राई-सरसों अनुसंधान निदेशालय (DRMR)** के रूप में स्थापित किया गया।
- DRMR की सर्वोच्च अनुसंधान समिति **अनुसंधान सलाहकार समिति (RAC)** होती है जो अनुसंधान कार्यक्रमों का मूल्यांकन और आकलन करती है।
- DRMR के प्रशासनिक नियंत्रण में अलवर जिले के गुंटा, बानसूर में 28 मार्च 2012 को ICAR ने कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापित किया गया है।

51. Ans. (2)

केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान

- अखिल भारतीय शुष्क क्षेत्र फल समन्वित अनुसंधान परियोजना के केन्द्र को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार से लाकर बीकानेर में 1993 में स्थानांतरित करके शुष्क बागवानी अनुसंधान केन्द्र का कार्य वास्तविक रूप में आरंभ हुआ।
- **27 सितंबर 2000** से इसे संस्थान का दर्जा दिया गया और इसका नाम केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर रखा गया। अक्टूबर 2000 से भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलौर के गोधरा (गुजरात) स्थित केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र को इसमें विलय कर दिया गया था।

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

- शुष्क और अर्द्धशुष्क क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक विकास में ऊँटों के महत्त्व को अनुभव करते हुए भारत सरकार ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अधीन बीकानेर में उष्ट्र परियोजना निदेशालय की स्थापना 5 जुलाई 1984 को की थी।
- यह केन्द्र बीकानेर के **जोहड़बीड़** क्षेत्र में स्थित है जिसे **20 सितंबर 1995** को क्रमोन्नत कर **राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान** केन्द्र का नाम दिया गया है।
- सामाजिक कार्य शोध संस्थान तिलोनिया, अजमेर में स्थित है।
- भारतीय हथकरघा प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना वर्ष 1993 में जोधपुर में की गई थी।

कलाम ACADEMY

52. Ans. (3)

केन्द्रीय राज्य फार्म

- इसकी स्थापना 15 अगस्त 1956 को सूरतगढ़, श्रीगंगानगर में रूस (तत्कालीन USSR) की सहायता से की गई।
- यह एशिया का सबसे बड़ा (29919 एकड़ क्षेत्र में विस्तृत) कृषि फार्म है।
- वर्ष 2018 में यहाँ रशियन मशीनरी म्युजियम की स्थापना की गई।

53. Ans. (4)

- कृषि अनुसंधान स्टेशन, मंडोर (जोधपुर) - 1A
- कृषि अनुसंधान स्टेशन, गंगानगर - IB
- कृषि अनुसंधान स्टेशन, बीकानेर - 1C
- कृषि अनुसंधान स्टेशन, फतेहपुर (सीकर) - IIA
- कृषि अनुसंधान स्टेशन, केशवाना (जालौर) - IIB
- कृषि अनुसंधान स्टेशन, दुर्गापुरा (जयपुर) - IIIA
- कृषि अनुसंधान स्टेशन, नवगाँव (अलवर) - IIIB
- कृषि अनुसंधान स्टेशन, उदयपुर - IVA
- कृषि अनुसंधान स्टेशन, उम्मेदगंज, कोटा - V

54. Ans. (2)

विभिन्न NGO के प्रशासनिक नियंत्रण में कृषि विज्ञान केन्द्र-
- संगरिया, हनुमानगढ़ (स्वीकृत 1989, स्थापना 1994)- ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया नामक एनजीओ के नियंत्रण में
- सरदारशहर, चूरू (स्वीकृत 1992, स्थापना 1994)- गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर नामक संस्थान के नियंत्रण में
- दंता, बाड़मेर (1992)- सोसायटी फॉर अपलीफमेंट ऑफ रूरल इकोनॉमी (SURE) नामक एनजीओ के नियंत्रण में
- बड़गाँव, उदयपुर (1983)- विद्या भवन सोसायटी नामक एनजीओ के नियंत्रण में

55. Ans. (3)

- **बरखान-** ये अनुप्रस्थ अर्द्धचन्द्राकार स्तूप हैं। जिनके दोनों किनारें सींग की तरह आगे की ओर निकले होते हैं। इनका पवनमुखी ढाल उत्तल व मन्द तथा पवनविमुखी ढाल अवतल व तीव्र खड़ा होता है। यह 10 से 20 मीटर ऊँचे तथा 100 से 200 मीटर चौड़े होते हैं।
- ये **चूरू (भालेरी), सीकर (मेंढा नदी घाटी क्षेत्र), जैसलमेर, बीकानेर (लूणकरणसर, करणीमाता), गंगानगर (सूरतगढ़), जोधपुर (ओसियाँ), बाड़मेर** आदि में स्थित है।
- **तारा स्तूप-** अनेक भुजाओं वाले तारे जैसी आकृति के स्तूप। उदाहरण- **मोहनगढ़ क्षेत्र (जैसलमेर-पोकरण) में एवं सूरतगढ़ क्षेत्र (गंगानगर) में।**

56. Ans. (2)

- **उत्तरी अरावली की प्रमुख चोटियाँ-**

(i) रघुनाथगढ़ (सीकर) - 1055 मी.
(ii) खो (जयपुर) - 920 मी.
(iii) भैरांच (अलवर) - 792 मी.
(iv) बरवाड़ा (जयपुर) - 786 मीटर
(v) बबाई (झुन्झुनूं) - 780 मीटर
(vi) बिलाली (अलवर) - 775 मीटर
(vii) मनोहरपुरा (जयपुर) - 747 मीटर
(viii) बैराठ (जयपुर) - 704 मीटर
(ix) कांकनवाड़ी (अलवर) - 677 मीटर
(x) बालागढ़ (अलवर) - 597 मीटर
(xi) सिरावास (अलवर) - 651 मीटर
(xii) भानगढ़ (अलवर) - 649 मीटर
(xiii) जयगढ़ (जयपुर) - 648 मीटर
(xiv) नाहरगढ़ (जयपुर) - 599 मीटर

- मारायजी/टोडगढ़/गोरमजी की चोटी (934 मी.) अजमेर में स्थित है जो कि मध्य अरावली की चोटी है।
- सायरा (900 मी.) व नागपानी (867 मी.) उदयपुर में स्थित है जो कि दक्षिणी अरावली की चोटियाँ हैं।

57. Ans. (1)

- राजस्थान के अर्द्धशुष्क/बांगर प्रदेश के नागौरी उच्च भूमि क्षेत्र मुख्यत: नागौर, डीडवाना-कुचामन तथा अजमेर में विस्तृत है। इसके अन्तर्गत नागौर जिले का समुद्र तल से 300 से 500 मीटर औसत ऊँचाई वाला क्षेत्र आता है। यह आन्तरिक अपवाह की श्रेणी में आता है। यहाँ कुछ खारे पानी की प्लाया झीलें पाई जाती हैं। जैसे- साँभर, डीडवाना, डेगाना, कुचामन, नावाँ, तालछापर, परिहारा/पड़िहारा (चुरू)।

58. Ans. (4)

- मध्य अरावली प्रदेश की ब्यावर तहसील में चार दर्रे है जिनके नाम है-

1. बर्र दर्रा
2. परवेरिया और शिवपुर घाट
3. सूरा घाट दर्रा
4. देबारी

59. Ans. (4)

पूर्वी मैदान-
- यह मैदानी प्रदेश अरावली के उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पूर्व के विस्तृत भागों में राज्य के लगभग 23.3 प्रतिशत भू-भाग पर फैला हुआ है।
- यह मैदान पश्चिम से पूर्व की 50 सेमी. समवर्षा रेखा द्वारा विभाजित है।
- मैदान की दक्षिण-पूर्वी सीमा विन्ध्य पठार द्वारा बनाई जाती है।
- इस मैदान के अन्तर्गत बनास बेसिन को देवगढ़ पिडमांट मैदान तथा मालपुरा करौली मैदान में विभक्त किया गया है।
- डाबी पठार बूँदी, कोटा की पहाड़ियों के मध्य हाड़ौती प्रदेश में स्थित है।

कलाम ACADEMY

60. Ans. (4)

- शाहबाद का उच्च क्षेत्र बारां जिले के पूर्वी भाग में मध्यप्रदेश से लगा हुआ क्षेत्र है। इस क्षेत्र में एक विशिष्ट आकृति रामगढ़ कस्बे के निकट घोड़े के नाल की आकृति की पर्वत श्रेणी है जिसे रामगढ़ क्रेटर के नाम से जाना जाता है।
- बूँदी पर्वत प्रदेश- खटखट दर्रा
- मध्य माही बेसिन का वांगड़ प्रदेश डूंगरपुर बाँसवाड़ा में विस्तृत है।
- झालावाड़ का पठार - यह दक्षिणी हाड़ौती क्षेत्र में स्थित है जो मालवा के पठार का उत्तरी भाग है।
- **ढाड़**- उत्तर पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में बालूका स्तूपों की दो भुजाओं के मध्य वायु की रगड़ से बने गर्तनुमा भाग जो जल भरने से विशिष्ट अस्थाई लवणीय झील के रूप में परिवर्तित हो जाता है, जिसे स्थानीय भाषा में ढाँड कहा जाता है।

61. Ans. (4)

- **डग-गंगधार के उच्च क्षेत्र**- यह मुख्यत: झालावाड़ जिले में स्थित है। यह हाड़ौती के पठार के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है। डंग-गंगधार का क्षेत्रफल 1429 वर्ग किमी. है, जो हाड़ौती के पठार की सबसे छोटी भू-आकृतिक इकाई है। इसकी औसत ऊँचाई 450 मीटर है। यहाँ अनेक छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं जो एकाकी रूप से यत्र-तत्र विस्तृत हैं। इसकी पश्चिमी सीमा चम्बल नदी बनाती हैं, इस भाग की धरातलीय विविधता बहुत कम है।

62. Ans. (3)

- अरावली थार मरुस्थल के पश्चिम से पूर्व की ओर प्रसार को रोकती है।
- अरावली में विभिन्न प्रकार की वनस्पति, वन्य जीव व औषधीय पादप(जड़ी-बूटियां) पाए जाते हैं। आदि सभी कारणों से अरावली को **राजस्थान की जीवन रेखा** भी कहा जाता है।
- अरावली दक्षिणी पश्चिमी मानसून को रोककर राजस्थान के पूर्वी व दक्षिणी भाग में वर्षा करवाती है।
- दक्षिणी पूर्वी पठार या हाड़ौती पठार में लावा मिश्रित शैल एवं विन्ध्य शैलों का मिश्रण है। इसका विस्तार झालावाड़, कोटा, बारां और बूँदी जिलों में है।
- थार का मरुस्थल का सामान्य ढाल पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण है।
- मरुस्थलीय प्रदेश को 4 भागों में बाँटा गया है-
  1. शुष्क रेतीले प्रदेश (मरुस्थलीय प्रदेश का पश्चिमी भाग)
  2. लूणी-जवाई बेसिन (मरुस्थलीय प्रदेश का दक्षिण पूर्वी भाग)
  3. शेखावाटी प्रदेश (मरुस्थलीय प्रदेश का उत्तरी पूर्वी भाग)
  4. घग्घर का मैदान (मरुस्थलीय प्रदेश का उत्तरी भाग)

63. Ans. (3)

- **पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश**- राज्य के **61.11%** (1,75,000 वर्ग किमी.) भू-भाग पर पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश का विस्तार है। पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश के **58.5 %** भाग पर **बालुका स्तूप** पाये जाते हैं तथा **41.5%** भाग **बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश** के अंतर्गत आता है। जैसलमेर के चारों ओर का 65 किमी. क्षेत्र, **पोकरण (जैसलमेर), फलौदी (जोधपुर)** का क्षेत्र बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश में आता है।

64. Ans. (4)

पठार	ऊँचाई	अवस्थिति
1. उड़िया का पठार	1360 मी.	सिरोही (राजस्थान का सबसे ऊँचा पठार)
2. भोराट का पठार	1225 मी.	उदयपुर के उत्तर-पश्चिम में गोगुन्दा से कुम्भलगढ़ के मध्य
3. माउन्ट आबू का पठार	1200 मी.	सिरोही
4. ऊपरमाल का पठार	-	भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) से बिजौलिया (भीलवाड़ा) के मध्य
5. लसाड़िया का पठार	325-650 मी.	सलूम्बर (जयसमन्द झील के पूर्व में कटा-फटा पठार)
6. मेसा का पठार	620 मी.	चित्तौड़गढ़ किला इस पर अवस्थित है।
7. कांकनबाड़ी का पठार	-	अलवर
8. पोतवार का पठार	-	अलवर (उत्तरी पूर्वी अरावली)
9. हाड़ौती का पठार	450 मी.	झालावाड़ (मालवा पठार का उत्तर पूर्वी भाग) कोटा, बारां बूंदी
10. भोमट का पठार	244 मी.	उदयपुर, डूँगरपुर

65. Ans. (3)

- प्रश्न संख्या 64 की व्याख्या देखें।

66. Ans. (1)

- उत्तरी-पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश के पचपदरा (बालोत्तरा) खारे पानी की झील भी स्थित है, तथा यहाँ कलीमा पहाड़, नरसिंहपुर पहाड़ व हिंगलाज का मगरा भी स्थित है।
- इस प्रदेश में दक्षिणी बाड़मेर के सिवाना क्षेत्र में कुछ गोलाकार पहाड़ियाँ स्थित हैं जिन्हें **छप्पन की पहाड़ियाँ** कहा जाता है। इन पहाड़ियों में **नाकोड़ा पहाड़ी** भी स्थित है, जिसके समीप प्रसिद्ध जैन मंदिर है।

67. Ans. (2)

- दक्षिणी हाड़ौती क्षेत्र झालावाड़ का पठार है, जो मालवा के पठार का उत्तरी भाग है। यहाँ काली मिट्टी का विस्तार है। इसके दक्षिणी-पश्चिमी भाग में डग-गंगधार की उच्च भूमि है। यह क्षेत्र सामान्यत: 450 मीटर ऊँचाई का है, जिसमें छोटी-छोटी पहाड़ियाँ यत्र-तत्र विस्तरित है।

68. Ans. (2)

- **कोटा की पहाड़ियाँ**- इन्हें **मुकुन्दरा की पहाड़ियों** के नाम से भी जाना जाता है, जो मुख्यत: कोटा व आंशिक रूप से झालावाड़ में स्थित है। मुकन्दरा श्रेणियाँ हाड़ौती पठार के मध्य से उत्तर-पश्चिम से होकर दक्षिण-पूर्व दिशा में लगभग 120 किमी. की लम्बाई में विस्तृत है। यहाँ दो पृथक् श्रेणियों वाली श्रृंखला है, जो समानान्तर रूप से लगीाग 150 मीटर की दूरी में फैली है। इनकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 335 से 503 मीटर है। चँदवाड़ा क्षेत्र में इनकी सर्वोच्च चोटी 517 मीटर ऊँची है।

69. Ans. (1)

- **दक्षिण अरावली की प्रमुख चोटियाँ-**

(i) गुरूशिखर (सिरोही)- 1722 मी./5650 फीट
(ii) सेर(सिरोही) - 1597 मीटर
(iii) देलवाड़ा(सिरोही) - 1442 मीटर
(iv) जरगा(उदयपुर) - 1431 मीटर
(v) अचलगढ़(सिरोही) - 1380 मीटर
(vi) आबू (सिरोही) - 1295 मीटर
(vii) कुंभलगढ़(राजसमंद) - 1224 मीटर
(viii) धोनिया डूँगर(राजसमंद-उदयपुर)- 1183 मीटर
(ix) ऋषिकेश (सिरोही) - 1017 मीटर
(x) कमलनाथ (उदयपुर) - 1001 मीटर

70. Ans. (2)

- वर्ष 2002 में 86वें संविधान संशोधन के तहत 6 से 14 वर्ष के बालकों के लिए अनुच्छेद 21A के तहत शिक्षा का अधिकार प्रदान किया गया। इस मूल अधिकार को लागू करने के क्रम में 26 अगस्त 2009 को बालकों के लिए नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित किया गया। जिसे केन्द्र सरकार द्वारा गजट नोटिफिकेशन जारी करके 1 अप्रैल 2010 से सम्पूर्ण देश में लागू किया गया।

71. Ans. (2)

- **इस अधिनियम में 7 अध्याय, 39 धाराएँ तथा 1 अनुसूची है।**

क्र. सं.	अध्याय का नाम	धाराएँ
1.	प्रारम्भिक	धारा 1 व धारा 2
2.	नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार	धारा 3 से 5 तक
3.	समुचित सरकार, स्थानीय प्राधिकारी एवं माता-पिता के कर्तव्य	धारा 6 से 11 तक
4.	विद्यालयों एवं शिक्षकों के उत्तरदायित्व	धारा 12 से 28 तक
5.	प्रारम्भिक शिक्षा का पाठ्यक्रम एवं उसका पूरा किया जाना	धारा 29 एवं 30
6.	बालकों के अधिकार का संरक्षण	धारा 31 से 34 तक
7.	प्रकीर्ण (अन्य मुख्य बातें)	धारा 35 से 39 तक

72. Ans. (2)

- राजस्थान सरकार द्वारा नोटिफिकेशन जारी करके सत्र 2025-26 के लिए निम्नलिखित बालकों को असुविधाग्रस्त समूह के बालकों में रखा है :-
  - अनुसूचित जाति वर्ग,
  - अनाथ बालक
  - अनुसूचित जनजाति वर्ग,
  - युद्ध विधवा का बालक
  - नि:शक्त बालक
  - बीपीएल अभिभावक के बच्चे

- OBC (पिछड़ा वर्ग) व SBC (विशेष पिछड़ा वर्ग) के बालक (अभिभावक की आय सीमा अधिकतम 2.50 लाख रु.)
- HIV व कैंसर से पीड़ित बालक या HIV व कैंसर से प्रभावित माता-पिता/ संरक्षक के बालक

73. Ans. (4)

- **प्रारंभिक शिक्षा (Elementary Education)**- पहली कक्षा से आठवीं कक्षा तक की शिक्षा।
  (नोट- RTE 2009 में कहीं भी प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक शिक्षा शब्दों का उल्लेख नहीं है।)

74. Ans. (2)

- **धारा 3. नि:शुल्क व अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार:**

(1) 6-14 वर्ष के प्रत्येक बालक को अपने नजदीकी स्कूल (नेबरहुड स्कूल) में प्रारम्भिक शिक्षा पूरी होने तक नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार होगा।

नोट:- नेबरहुड स्कूल का विचार कोठारी आयोग की सिफारिशों से लिया गया है।

(2) कोई भी बालक ऐसे शुल्क या भुगतान के लिए उत्तरदायी नहीं होगा जो उसे प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करने से रोकता है।

(3) ***बहु नि:शक्तता*** (Multiple disability) तथा ***गंभीर नि:शक्तता*** (severe disabilities) वाले बालक को घर आधारित शिक्षा चुनने का अधिकार। (***2012 के संशोधन से जोड़ा गया***)

75. Ans. (3)

- **धारा 4. प्रवेश नहीं लेने वाले तथा प्रारंभिक शिक्षा पूरी नहीं करने वाले बालकों के लिए विशेष प्रावधान :**
  यदि कोई बालक 6 साल से ऊपर हो गया है तथा अभी तक स्कूल में प्रवेश नहीं लिया है या अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने से पहले ही स्कूल छोड़ चुका है तो उसे उसकी ***आयु के अनुसार*** कक्षा में प्रवेश मिलेगा।
  उदाहरणार्थ- बालक 8 वर्ष का है तो कक्षा 3 में 9 वर्ष का है तो कक्षा 4 में 10 वर्ष का है तो कक्षा 5 में तथा ऐसे ही आगे प्रवेश मिलेगा।
  यदि किसी बालक का प्रारम्भिक शिक्षा में प्रवेश किया जाता है तो उसे 14 साल के बाद भी प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करने का अधिकार होगा।

76. Ans. (4)

- **प्रश्न संख्या 75 की व्याख्या देखें।**

77. Ans. (4)

धारा 8. समुचित सरकार के कर्त्तव्य :

- 6 से 14 वर्ष की आयु के प्रत्येक बालक को नि:शुल्क प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध करवायी जाए।
- बच्चों की शिक्षा के लिए उनके आस-पास ही स्कूल उपलब्ध करवाना। (धारा 6 के अनुसार)
- आयु के अनुसार कक्षा में प्रवेश दिए गए बालकों को अन्य बालकों के समान स्तर पर लाने के लिए विशेष प्रशिक्षण या प्रक्रिया सुविधा तय करना सुनिश्चित करेगी। (धारा 4 के अनुसार)
- प्रारम्भिक शिक्षा के लिए समय पर पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम विहित करना सुनिश्चित करेगी।
- शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराएगी।

नोट:- शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु मानकों का विकास व उनको लागू करना **केन्द्र सरकार** का कर्त्तव्य है।

78. Ans. (3)

- **धारा 10. माता-पिता और संरक्षक का कर्त्तव्य**
  प्रत्येक बच्चे के माता-पिता या संरक्षक या अभिभावक की जिम्मेदारी होगी कि उनके बच्चों को आस-पास के विद्यालय में प्रवेश दिलाएं और नियमित विद्यालय भेजें।

79. Ans. (2)

- **धारा 12. नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा के लिए विद्यालय के उत्तरदायित्व की सीमा**

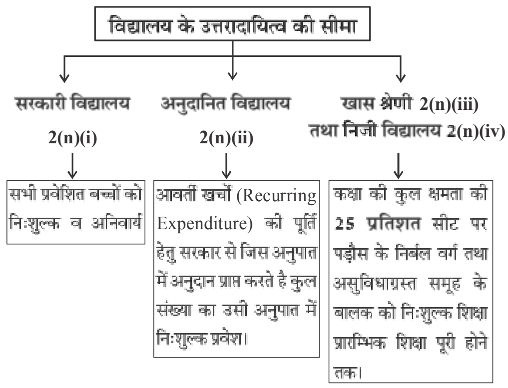

यदि किसी विद्यालय में विद्यालय पूर्व शिक्षा (Pre School Education) दी जाती है तो उपरोक्त उपबंध प्री-स्कूल एजुकेशन में भी लागू होंगे।

कलाम ACADEMY

80. Ans. (3)

- **धारा 16. रोकने और निष्कासन का प्रतिषेध**

अधिनियम की धारा-16 में संशोधन करके इस धारा को उपधारा - (1), (2), (3) तथा (4) में विभाजित किया गया।

उपधारा-16 (1)

प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के अंत में कक्षा 5 और कक्षा 8 की नियमित रूप से परीक्षाएँ होगी।

उपधारा-16 (2)

यदि कोई छात्र कक्षा 5 और कक्षा 8 परीक्षा में असफल हो जाता है तो उसे अतिरिक्त निर्देशन प्रदान किया जाएगा और परीक्षा परिणाम घोषित किए जाने की तारीख से 2 माह के भीतर पुनः परीक्षा देने का मौका दिया जाएगा।

उपधारा-16 (3)

समुचित सरकार, स्कूल को यह अनुमति प्रदान कर सकती है कि वह 5वीं या 8वीं कक्षा या दोनों कक्षाओं में बच्चे द्वारा पुनःपरीक्षा (री-एग्जाम) में अनुत्तीर्ण होने पर बच्चे को उस कक्षा में **रोक सकती है।**

परन्तु समुचित सरकार यह भी निर्धारित कर सकती है कि बच्चे को प्राथमिक शिक्षा पूर्ण होने तक किसी भी कक्षा में नहीं रोका जाये।

उपधारा-16(4)

संशोधन अधिनियम के अनुसार, किसी छात्र को प्रारम्भिक शिक्षा पूरी किए जाने तक विद्यालय से **निष्कासित नहीं किया जायेगा।**

81. Ans. (3)

शिक्षण विधियाँ

शिक्षक केन्द्रित विधियाँ	छात्र केन्द्रित विधियाँ
1. व्याख्यान विधि	1. प्रयोजना/ प्रोजेक्ट विधि
2. प्रदर्शन विधि	2. प्रयोगशाला विधि
3. व्याख्यान प्रदर्शन विधि	3. अन्वेषण या खोज विधि
4. ऐतिहासिक विधि	4. विचार-विमर्श विधि
5. सामूहिक अध्यापन	5. पर्यटन/शैक्षिक भ्रमण विधि
6. पाठ्य पुस्तक विधि	6. अभिक्रमित अनुदेशन
7. कहानी विधि	7. समस्या समाधान विधि
8. दल शिक्षण विधि	8. मस्तिष्क उद्वेलन विधि
9. ट्यूटोरियल विधि	9. खेल विधि
10. निगमन विधि	10. सहयोगात्मक अधिगम
11. संश्लेषण विधि	11. कम्प्यूटर सहाय अनुदेशन
	12. आगमन विधि
	13. विश्लेषण विधि
	14. सामाजिकृत अभिव्यक्ति/ सामूहिक वाद-विवाद विधि

82. Ans. (2)

1. **वेस्ले :-** ''सामाजिक अभिव्यक्ति एक आदर्श है, जो शिक्षण में ऐसे प्रयोग की कल्पना करता है जिससे कक्षा के समस्त छात्र सहयोग एवं सद्भावना का ज्ञान अर्जित कर सके''
2. **योकम तथा सिम्पसन -** ''सामाजीकृत अभिव्यक्ति में बालक विचार-विमर्श करते हैं, योजना बनाते हैं, प्रश्न करते हैं एवं प्रतिवेदन तैयार करते हैं। शिक्षक की भूमिका निर्देशक, परामर्शक, मार्गदर्शक की होती है।''
3. **प्रो. बाइनिंग एवं बाइनिंग :-** ''किसी भी कक्षा-कक्ष में जहां समूह चेतना दृष्टिगत होती है तथा प्रत्येक समूह के लिये जिम्मेदारी का भाव रखता है, समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि है।''

कलाम ACADEMY

83. Ans. (3)

- **वर्तमान समय में प्रयोजना विधि से शिक्षण के दौरान मुख्यत: या सामान्यत: 6 पदों का अनुसरण किया जाता है जो निम्न है -**
- परिस्थिति प्रदान करना (Providing a Situation)
- प्रोजेक्ट का चुनाव और उसके उद्देश्य का स्पष्टीकरण (Choosing of Project & Defining it's purpose)
- परियोजना का नियोजन/कार्यक्रम बनाना (Planning of the Project)
- प्रोजेक्ट का क्रियान्वयन (Execution of the Project)
- प्रोजेक्ट का मूल्यांकन (Evaluation of the Project)
- प्रोजेक्ट का अभिलेखन/आलेखन (Recording of the Project)

84. Ans. (1)

- संसद के कार्य प्रकरण को पढ़ाने के लिए सर्वोत्कृष्ट तरीका मुद्दों पर सहमति बनाने के लिए वाद-विवाद का आयोजन करना है।

85. Ans. (4)

मस्तिष्क उद्वेलन विधि-

- इस विधि का मूल आधार यह है कि एक व्यक्ति की अपेक्षा व्यक्तियों का समूह अधिक विचार व्यक्त कर सकता है अर्थात् इस विधि के द्वारा छात्र सामूहिक रूप से सोचता है, व्यक्तिगत नहीं।
- ऐलेक्स ऑसबोर्न के अनुसार दो रूप होते हैं-

  1. नये विचारों का सृजन
  2. नये विचारों की आलोचना करता है।
- जब दूसरा वाला रूप सक्रिय होता है तो नये विचारों का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है। अत: दूसरे रूप को स्थगित रखते हुए समूह में तीव्रता से नवीन विचार व्यक्त करने की प्रक्रिया ही मस्तिष्क विप्लव होता है।
- मस्तिष्क विप्लव का तात्पर्य **मस्तिष्क की उथल-पुथल** से है अर्थात् मस्तिष्क में विचारों के तूफान आना, जिससे किसी भी विषय में ढ़ेरों विचार एक साथ अचानक बिना किसी तथ्य की परवाह किए उभर आते हैं, जिसे मस्तिष्क विप्लव की संज्ञा दी जाती है।

84. Ans. (1)

- इसका मुख्य प्रयोजन बालकों के मस्तिष्क को झकझोर कर उसे मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति करने हेतु उत्प्रेरित करना तथा उनकों स्वतंत्र चिंतन का कौशल विकसित करना होता है। विद्यार्थी, नवीन तथा सृजनात्मक विचार प्रस्तुत करते हैं, उन्हें लिपिबद्ध करते हैं तथा विचार विमर्श के आधार पर किसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं।

86. Ans. (3)

शैक्षिक भ्रमण विधि-

- इस विधि द्वारा **प्रत्यक्ष अनुभव, निरीक्षण क्षमता, अनौपचारिक शिक्षण, रुचिपूर्ण अधिगम, सामाजिक गुणों** का विकास होता हैं। आधुनिक काल में इस विधि का प्रतिपादन **प्रोफ़ेसर रैन** द्वारा 19वीं शताब्दी में किया गया।
- **शैक्षिक भ्रमण के उद्देश्य :**

  1. विषय के प्रति रूचि विकसित करना।
  2. वास्तविक प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करना।
  3. निरीक्षण या अवलोकन क्षमता का विकास करना।
  4. व्यावहारिक ज्ञान देना।

87. Ans. (4)

- प्रदर्शन विधि में शिक्षक की भूमिका सुविधा प्रदाता और मार्गदर्शक के रूप में होती है।

88. Ans. (3)

रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन की विशेषताएं -

- रेखीय अभिक्रम में छात्र विषय वस्तु के छोटे-छोटे पदों के माध्यम से एक रेखीय मार्ग पर गति करते हुए अंतिम व्यवहार तक पहुंचता है। ये पद तार्किक रूप में क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित होते हैं।
- इसमें छात्र की अनुक्रिया की जांच कर सही अनुक्रिया के लिए तुरन्त पृष्ठपोषण की व्यवस्था होती है। सही अनुक्रिया पर यह पृष्ठपोषण पुनर्बलन का कार्य करता है जिससे अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी हो जाती है।
- इसमें सभी छात्र एक समान मार्ग पर चलकर अंतिम लक्ष्य या व्यवहार तक पहुंचते हैं।

कलाम ACADEMY

- रेखीय अभिक्रम में अनुदेशन की प्रक्रिया अभिक्रम निर्माण कर्त्ता द्वारा नियंत्रित रहती है। वह जैसा अभिक्रम बनाता है सभी अधिगम कर्त्ताओं को उसके बनाए हुए अभिक्रम में निर्धारित मार्ग का अनुसरण करना होता है।
- रेखीय अभिक्रम में प्रत्येक अधिगमकर्त्ता को अपनी योग्यता के आधार पर अथवा जिस गति से वह सीखने के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहता है उसके अनुरूप आगे बढ़ने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।
- रेखीय अभिक्रम में चूंकि पद बहुत छोटे-छोटे होते हैं और अधिगमकर्त्ता को तब तक दूसरे पद पर नहीं जाने दिया जाता जब तक वह इस पद में पारंगत न हो जाए। इसलिए इस अभिक्रम शैली में अधिगमकर्त्ता अन्य शैलियों की अपेक्षा धीमी गति से ही अधिगम मार्ग पर बढ़ सकता है।

89. Ans. (3)

दल शिक्षण-
- दल शिक्षण में दो या दो से अधिक शिक्षक एक-दूसरे को सहयोग करते हुये विद्यार्थियों के समूह को किसी विषय विशेष का शिक्षण कराते हैं। ये शिक्षक अपने-अपने (विभिन्न विषयों) क्षेत्र के विशेषज्ञ होते हैं। ऐसा शिक्षण **दल शिक्षण** या **समूह शिक्षण** या **टोली शिक्षण** या **सहकारिता शिक्षण** कहलाता है।
- इसका उपयोग सबसे अधिक उच्च विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर किया जाता है।

90. Ans. (4)

समस्या समाधान विधि के गुण/लाभ -
- इस विधि द्वारा छात्रों में विश्लेषण, संश्लेषण एवं समालोचनात्मक चिन्तन का विकास होता है।
- इससे छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है।
- इस विधि द्वारा निरीक्षण शक्ति एवं तर्क शक्ति का विकास होता है।
- इस विधि द्वारा सीखने पर छात्रों को अपने ज्ञान और अनुभवों को उपयोग में लाने का अवसर मिलता है।
- समस्या समाधान विधि व्यक्तित्व विकास में भी सहायक है।
- इस विधि में छात्र मिलकर एक साथ काम करते है, जिससे उनमें सहयोग एवं समूह भावना का विकास होता है।

91. उत्तर (2)

सिंधु घाटी सभ्यता स्थल	वर्तमान स्थिति
शोर्तुघई, मुण्डीगाक	अफगानिस्तान
सुत्कागेण्डोर, सुत्काकोह, बालाकोट	ब्लूचिस्तान (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, कोटदीजी, जुदीरजोदड़ो	सिंध (पाकिस्तान)
हड़प्पा, गनेरीवाला, रहमान ढ़ेरी, सरायखोला	पंजाब (पाकिस्तान)
कालीबंगा, पीलीबंगा	राजस्थान
आलमगीरपुर, हुलास	उत्तरप्रदेश
धौलावीरा, देसलपुर, सुरकोटड़ा, जुनीकरण	कच्छ, गुजरात
रंगपुर, प्रभासपाटन, रोजदी, लोथल	गुजरात
रोपड़, बाड़ा, संघोल	पंजाब (भारत)
राखीगढी, बनावली, मीताथल	हरियाणा
दैमाबाद	महाराष्ट्र

92. उत्तर (3)

- हड़प्पा स्थल की खोज 1921 में दयाराम साहनी ने की। दयाराम साहनी ने यहां से मुहरों की खोज की।
- हड़प्पा से महिलाओं के टेरीकोटा निर्मित मूर्तियां मिली हैं।
- हड़प्पा से कुल 6 अन्नागार प्राप्त हुए है।

कलाम ACADEMY

93. उत्तर (1)

- मोहनजोदड़ों की खोज 1922 में राखलदास बनर्जी ने की थी। यहां से कपड़ों के टुकड़े, चाँदी के फूलदान का ढ़क्कन, फेयॉन्स से बनी तकलियाँ मिली है।

94. उत्तर (3)

- कालीबंगा की खोज अमलानंद घोष ने की।
- चन्हूदड़ों की खोज एन.जी. मजूमदार ने की।
- बनावली का उत्खनन आर.एस. बिष्ट द्वारा किया गया।
- राखीगढ़ी का उत्खनन सूरजभान द्वारा किया गया।

95. उत्तर (2)

- मोहनजोदड़ों से मानवीकृत मुद्रा में पुरोहित राजा की मूर्ति मिली है।

96. उत्तर (3)

- सूरकोटड़ा से घोड़े की अस्थियों के साक्ष्य मिलें है।
- राखीगढ़ी से हाथ में शंख की बनी चुड़ियाँ पहनें तीन कंकाल मिलें है।
- चन्हूदड़ों से मनके बनाने का कारखाना मिला है।
- रोपड़ से मानव के साथ कुत्ते को दफनाने का साक्ष्य मिला है।

97. उत्तर (3)

- राखीगढ़ी वर्तमान तक उत्खनित हड़प्पा स्थलों में सबसे बड़ा है।

98. उत्तर (1)

- मेसोपोटामिया से तीसरी सह-सत्राब्दी ई.पू. के लेख में हड़प्पा संस्कृति के लिए मेलुहा शब्द लिखा गया है।

99. उत्तर (2)

- सिंधु सभ्यता से निशान रहित चर्ट पत्थर से निर्मित बाट मिले हैं
- सिंधु सभ्यता में सर्वाधिक मोहरें मोहनजोदड़ों से मिली हैं। जबकि सर्वाधिक लेखयुक्त मोहरें हड़प्पा स्थल से मिली हैं।
- लोथल एवं मोहन जोदड़ों की मोहर पर नाव तथा जहाज के चित्र मिलें हैं।
- सिंधु सभ्यता की लिपि बूस्त्रोफेडोन थी।

कलाम ACADEMY

100. उत्तर (3)

- लोथल स्थल से युगल शवाधान के साक्ष्य मिलें हैं।

101. उत्तर (2)

- व्हीलर ने सिन्धु सभ्यता के विनाश के लिए ऋग्वेद में उल्लेखित इन्द्र को उत्तरदायी माना है।

102. उत्तर (1)

- अर्नेस्ट मैके ने सिन्धु सभ्यता पर अर्ली इंडस सिविलाईजेशन, 1948 नामक पुस्तक लिखी।

103. उत्तर (1)

- वैदिक संस्कृति का काल 1500 ई. पू. से 600 ई.पू. माना जाता है। जिसमें 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. ऋग्वेदिक काल और 1000 ई.पू. से 600 ई.पू. उत्तरवैदिक काल माना जाता है।

104. उत्तर (4)

- ऋग्वेद के 10 मण्डल है जिसमें सातवें मण्डल की ऋचाएँ सबसे पुरानी हैं। एवं तीसरे मण्डल के देवी सुक्त में गायत्री मंत्र संकलित है।
- ऋग्वेद की कुल 21 शाखाएँ थी।

105. उत्तर (1)

ऋग्वेदिक कालीन नदियाँ

प्राचीन नाम	वर्तमान नाम	प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
कुभा	काबुल	सुवस्तु	स्वात
कुर्मु	कुर्रुम	सिन्धु	सिन्ध
गोमती	गोमल	वितस्ता	झेलम
विपाशा	व्यास	अश्किनी	चिनाब
शतुद्री	सतलज	परुषणी	रावी
द्वषद्वती	सरस्वती		

106. उत्तर (3)

- छान्दोग्य आरण्यक और जैमिनीय आरण्यक सामवेद से सम्बन्धित है।
- बृहदारण्यक यजुर्वेद से सम्बन्धित है।

107. उत्तर (4)

- अथर्ववेद में चिकित्सा विधि एवं रोगों से सम्बन्धित ज्ञान का संकलन मिलता है।

108. उत्तर (1)

- ऋग्वेदिक काल में विदथ, सभा, समिति आदि संस्थाऐं अस्तित्व में थी लेकिन उत्तरवैदिक काल में विदथ का अस्तित्व समाप्त हो गया।

109. उत्तर (1)

- ऋग्वेद में अश्व का उल्लेख 215 बार मिलता है।
- ऋग्वेद में गाय का उल्लेख 176 बार मिलता है।
- ऋग्वेद में बैल का उल्लेख 170 बार मिलता है।
- ऋग्वेद में इन्द्र देवता का उल्लेख 250 बार मिलता है।

110. उत्तर (1)

- सांची स्थल के तोरणद्वार का हिस्सा हाथी दाँत का काम करने वाली शिल्पकारों के दान से बनाया गया था।

111. उत्तर (2)

व्याख्या-

- वृहदारण्यकोपनिषद् में याज्ञवल्क्य-मैत्रयी संवाद मिलता है।

112. उत्तर (3)

- 'सत्यमेव जयते' मुण्डक उपनिषद् से लिया गया है।
- भक्ति शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख श्वेताश्वर उपनिषद् में मिलता है।

113. उत्तर (1)

- ऋग्वेद के नौवे मण्डल में 'मैं मंत्र का निर्माता हूँ, मेरे पिता वैद्य है और मेरी माता पत्थर की चक्की से अन्न पसीने वाली महिला है।' का उल्लेख मिलता है।

114. उत्तर (4)

- हड़प्पावासियों द्वारा आयातित वस्तुऐं एवं सम्बन्धित स्थल-

सैंधव सभ्यता स्थल	प्राप्त कच्चा माल
नागेश्वर व बालाकोट	शंख
शोर्तुघई (अफगानिस्तान)	लाजवर्द मणि (नीले रंग की)
लोथल (भड़ौच, गुजरात)	कार्नीलियन
दक्षिणी राजस्थान व उत्तरी गुजरात	सेलखड़ी
खेतड़ी (राजस्थान)	ताँबा
दक्षिण भारत	सोना

115. उत्तर (4)

- सिन्धु सभ्यता के लोग सूती वस्त्र पहनते थे।
- सिन्धु सभ्यता में पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था।
- सिन्धु सभ्यता स्त्रियां चाँदी एवं ताँबे के आभूषण पहनती थी।

116. उत्तर (4)

- महात्मा बुद्ध द्वारा गृह त्याग की घटना महाभिनिष्क्रमण कहलाती है।
- महात्मा बुद्ध द्वारा गृह त्याग पश्चात् सत्य की खोज के लिए किये गये प्रयास आर्य पर्येषणा कहलाते है।
- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महात्मा बुद्ध द्वारा दिया गया प्रथम उपदेश धर्मचक्रप्रवर्तन कहलाता है।
- महात्मा बुद्ध द्वारा शरीर त्यागने की घटना को महापरिनिर्वाण कहा गया है।

117. उत्तर (3)

- महात्मा बुद्ध के अनुसार मनुष्य घोर तपस्या और विषयासक्ति के बीच मध्यम मार्ग को अपनाकर दु:खों से मुक्ति पा सकता है।

118. उत्तर (4)

- महात्मा बुद्ध की मृत्यु कुशीनारा में 483 ई.पू. हुई।

119. उत्तर (3)

- तृतीय बौद्ध सभा 251 ई. पू. में मोगलीपुततिस्स अध्यक्षता में हुई। इस सभा में अभिधम्म पिटक का संकलन किया गया।

120. उत्तर (2)

- बौद्ध स्तूप में अस्थियों को रखने का स्थान हर्मिका कहलाता है।

121. उत्तर (1)

- पृथ्वी पर एक साथ आधे भाग पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है इसलिए आधे भाग में दिन व आधे भाग में रात होती है। दिन व रात को अलग करने वाले वृत को **प्रदीप्ति/प्रदीपन वृत/प्रकाश वृत (Circle of Illumination)** कहा जाता है।

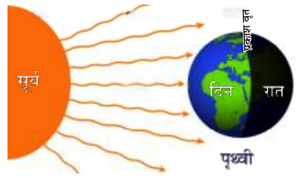

122. उत्तर (3)

- पृथ्वी की **परिक्रमण गति एवं अक्षीय झुकाव** के कारण पृथ्वी पर ऋतुएँ बनने एवं दिन-रात के छोटे-बड़े होने की क्रिया होती है। यदि पृथ्वी अपने अक्ष पर झुकी नहीं होती एवं केवल परिक्रमण गति ही होती तो सम्पूर्ण पृथ्वी पर हमेशा दिन-रात बराबर होते (12 घण्टे का दिन और 12 घण्टे की रात) एवं ऋतुएँ भी नहीं बनती।

नोट- ऋतुओं में परिवर्तन सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की स्थिति में परिवर्तन के कारण होता है।

123. उत्तर (1)

- पृथ्वी सूर्य के चारों ओर दीर्घवृत्ताकार/अण्डाकार पथ पर परिक्रमा करती है जिसके कारण पृथ्वी व सूर्य के बीच की दूरी परिवर्तित होती रहती है।
- **औसत दूरी** - 150 मिलियन कि.मी. (15 करोड़ कि.मी.)
- **न्यूनतम दूरी/उपसौर (Perihelion)** - 147 मिलियन कि.मी. (14.7 करोड़ कि.मी.)- 3 जनवरी को।
- **अधिकतम दूरी/अपसौर (Aphelion)** - 152 मिलियन कि.मी. (15.2 करोड़ कि.मी.)- 4 जुलाई को।

124. उत्तर (1)

घूर्णन गति-

- पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है जिसे दैनिक घूर्णन या परिभ्रमण गति (Rotation) कहा जाता है इस गति के कारण दिन व रात बनते हैं। यह गति पश्चिम से पूर्व दिशा में होती है जिसके कारण सूर्य पूर्व में उदय होता है एवं पश्चिम में अस्त होता है।
- पृथ्वी की **घूर्णन गति** के कारण केन्द्रापसारी बल (अपकेन्द्रीय बल) लगता है जिससे **भूमध्यरेखीय क्षेत्र** में अधिक **उभार एवं ध्रुवों पर चपटापन** पैदा हुआ है। इसी के कारण ही पृथ्वी का भूमध्यरेखीय व्यास अधिक एवं ध्रुवीय व्यास कम होता है एवं इस चपटेपन के कारण ही ध्रुवों के निकट अक्षांशों के बीच की दूरी थोड़ी सी अधिक मिलती है।
- **पृथ्वी की घूर्णन गति** के कारण ही **विक्षेप बल या कोरियालिस बल** उत्पन्न होता है जिससे हवाएं व धारायें **उत्तरी गोलार्द्ध में दायीं तरफ व दक्षिणी गोलार्द्ध में बायीं तरफ** मुड़ जाती हैं।
- भू-मध्य रेखा पर कोरियोलिस बल का मान शून्य तथा ध्रुवों पर सर्वाधिक होता है।
- **दिन रात** का बनना भी **पृथ्वी की घूर्णन गति** के कारण ही होता है।

125. उत्तर (1)

- ऋतुओं में परिवर्तन सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की स्थिति में परिवर्तन (पृथ्वी की परिक्रमण गति) के कारण होता है।

126. उत्तर (3)

परिक्रमण गति- सूर्य के चारों ओर एक स्थिर कक्षा में पृथ्वी की गति को ही वार्षिक/परिक्रमण गति (Revolution) कहते हैं। यह स्थिर कक्षा 965 मिलियन कि.मी. लम्बी है जिसे पृथ्वी 29.6 कि.मी. प्रति सेकण्ड की दर से 365¼ दिन (365 दिन एवं 6 घंटे) में पूर्ण करती है।

घूर्णन गति- पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है जिसे दैनिक घूर्णन या परिभ्रमण गति (Rotation) कहा जाता है इस गति के कारण दिन व रात बनते हैं। यह गति पश्चिम से पूर्व दिशा में होती है जिसके कारण सूर्य पूर्व में उदय होता है एवं पश्चिम में अस्त होता है।

127. उत्तर (3)

- समय का अंतर = 5 घंटे (09:30AM - 04:30 AM)

  पृथ्वी 24 घंटे में घूमती है = 360^0

  अत: 1 घंटे में पृथ्वी घूमेगी = $\frac{360}{24} = 15^0$

  अत: 5 घंटे में पृथ्वी घूमेगी = $15^o \times 5 = 75^o$ देशांतर अर्थात् दोनों देशांतरों के मध्य 75^o देशांतरों का अंतर होगा चूकि समय बढ़ रहा है तो 75^o पूर्वी देशांतर रेखा पर 09 : 30 AM का समय होगा।

128 उत्तर (2)

- ध्रुवों से विषुवत् रेखा की ओर बढ़ने पर अक्षांशों का आकार बढ़ता है परन्तु इनके बीच की दूरी कम होती जाती है। पृथ्वी ग्लोब की तरह पूर्ण गोल न होकर ध्रुवों पर थोड़ी चपटी है इसलिए ध्रुवों के निकट अक्षांशों के बीच की दूरी थोड़ी सी बढ़ जाती है।

129 उत्तर (2)

- 30^o उत्तरी अक्षांश की विपरीत अक्षांश - 30^o दक्षिणी अक्षांश
- 50^o पूर्वी देशांतर का विपरीत/प्रतिवृत्त देशांतर - 130^o पश्चिमी देशांतर
- अत: एक विमान 30^o उत्तरी अक्षांश, 50^o पूर्वी देशांतर से उड़ान भरता है और पृथ्वी पर विपरीत सिरे पर नीचे उतरता है, तो वह 30^o दक्षिणी अक्षांश तथा 130^o पश्चिमी देशांतर पर उतरेगा।

130. उत्तर (3)

- विषुवत वृत से दोनों तरफ विषुवत रेखा व ध्रुवों के बीच दूरी पृथ्वी के चारों ओर के वृत का एक चौथाई है। अत: इसका माप 360 अंश का 1/4 यानि 90 अंश होता है।
- ध्रुवों की ओर चलने पर अक्षांश वृत्तों की लम्बाई क्रमश: घटती जाती है। भूमध्य रेखा या 0^o अक्षांश वृत्त की लम्बाई सर्वाधिक (पृथ्वी की परिधि के बराबर) होती है जबकि शेष अक्षांश वृत्तों की लम्बाई कम होती जाती है एवं दोनों ध्रुव बिन्दु के रूप में बनते हैं।
- **ग्रिड** :- ग्लोब पर अक्षांश (समानान्तर) रेखाओं व देशान्तर रेखाओं के प्रतिच्छेद से बनी जालनुमा संरचना ग्रिड कहलाती है। ग्रिड की सहायता से ग्लोब पर किसी स्थान की सही स्थिति का ज्ञान होता है।

131 **उत्तर (4)**

- **प्रधान मध्याह्न रेखा व अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा :** वर्ष 1884 में लंदन के ग्रीनिच (जहाँ ब्रिटिश राज के वैद्यशाला स्थित है) से गुजरने वाली देशान्तर रेखा को 0° **देशान्तर रेखा/प्रधान मध्याह्न रेखा/प्रमुख याम्योत्तर/ग्रीनविच रेखा** माना गया। इसके पूर्व एवं पश्चिम में 180°-180° देशान्तर बनाये गये हैं।
- 180° पूर्वी व 180° पश्चिमी देशान्तर एक ही रेखा पर स्थित होते हैं।
- प्रधान मध्याह्न रेखा (0° देशान्तर रेखा) के ठीक विपरीत 180° देशान्तर रेखा होती है जिसे **अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा** कहा जाता है।

132. **उत्तर (1)**

वृहत वृत्त–

- वृहत वृत वह होता है जिसके सहारे पृथ्वी को दो समान भागों में विभक्त किया जा सकता है।
- भूमध्य रेखा एक वृहत वृत्त है लेकिन शेष अक्षांश वृत्तों से वृहत वृत्तों का निर्माण नहीं होता है अर्थात शेष अक्षांश लघु वृत्त होते हैं।
- देशान्तर रेखाओं की लम्बाई अर्द्धवृत (पृथ्वी की परिधि की आधी) के बराबर होती है अर्थात् दो परस्पर विपरीत बनी देशान्तर रेखाओं से एक वृहत वृत्त का निर्माण होता हैं। जैसे 0° एवं 180° देशान्तर रेखाएं परस्पर एक दूसरे के विपरीत खींची जाती है एवं इनसे मिलकर एक वृहत् वृत्त बनता है। यह वृहत् वृत पृथ्वी को दो समान भागों, पूर्वी गोलार्द्ध एवं पश्चिमी गोलार्द्ध में विभक्त करता है।
- देशान्तर रेखाओं की कुल संख्या 360 है अत: देशान्तर रेखाओं से 180 वृहत वृत्त बनेंगे। अत: अक्षांश वृत्तों से केवल 1 एवं देशान्तरों से 180 वृहत वृत्तों अर्थात् कुल 181 (1+180) वृहत वृत्तों का निर्माण होता है।
- परस्पर विपरीत दिशा में स्थित दो देशान्तरों से एक वृहत्त वृत्त का निर्माण होता है तथा किसी वृहत्त वृत्त के दोनों देशान्तरों के मानों का कुल योग 180° होता है।
- सभी देशांतर ध्रुवों के परस्पर मिलते है।

नोट– ग्रीनविच रेखा यूरोप व अफ्रीका महाद्वीप से गुजरती है।

133. **उत्तर (1)**

- **लघु ज्वार (Neap Tide) :** जब चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए इस प्रकार की स्थिति में आ जाये कि सूर्य व चंद्रमा, पृथ्वी परस्पर समकोण हो जाये तो सूर्य व चंद्रमा का गुरूत्वाकर्षण बल एक दूसरे के विपरीत कार्य करता है जिससे चन्द्रमा के सम्मुख व विमुख भाग का जल सामान्य की अपेक्षा कम ऊँचा उठ पाता है जिसे लघु ज्वार कहते हैं। (सामान्य से 20 प्रतिशत कम ऊँचा)
- यह स्थिति सामान्यत: कृष्ण/शुक्ल पक्ष की अष्टमी को आती है। (माह के प्रथम व तृतीय चतुर्थक में)
- एक दीर्घ ज्वार के 7 दिन बाद लघु ज्वार आता है।

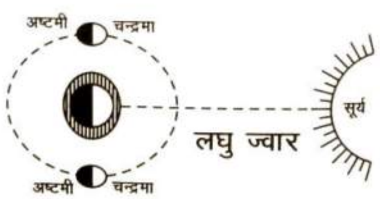

134 **उत्तर (4)**

- सूर्य व चंद्रमा के गुरूत्वाकर्षण बल/ज्वारीय बल तथा पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले अपकेंद्रीय बल के कारण सागरीय जल के नियतकालिक ऊपर उठने को **ज्वार** व नीचे गिरने को **भाटा** कहते हैं।
- सूर्य की तुलना में चंद्रमा पृथ्वी के नजदीक होने से चंद्रमा का गुरूत्वाकर्षण बल सूर्य की तुलना में 2.17 गुना अधिक है।

135. **उत्तर (2)**

- युति की स्थिति में सूर्य एवं चन्द्रमा दोनों पृथ्वी के एक तरफ होते हैं।

136. **उत्तर (4)**

- विश्व में सबसे ऊँचा ज्वारभाटा कनाडा, फंडी की खाड़ी (नवास्कोशिया, 15-16 मीटर ऊँचाई) में आता है।
- भारत में सबसे ऊँचा ज्वार भाटा खम्भात की खाड़ी में आता है।
- इंग्लिस चैनल में एक दिन (24 घण्टे) में 4 ज्वार आते हैं।

137. उत्तर (2)

महोर्मि (Surge)-
- जलवायु संबंधी प्रभावों (वायु एवं वायुमंडलीय दाब में परिवर्तन) के कारण जल की गति को महोर्मि कहा जाता है।
- महोर्मि ज्वारभाटाओं की तरह नियमित नहीं होते।
- तरंग आयाम तरंग की ऊँचाई का आधा होता है।
- **उपभू ज्वार (Perigee Tide) (भूमि नीच ज्वार)**:- जब पृथ्वी व चंद्रमा के मध्यदूरी न्यूनतम (3,56,000 किमी.) हो तो यह स्थिति उप-भू कहलाती है। इस स्थिति में सामान्य ज्वार की अपेक्षा 20 प्रतिशत अधिक ऊँचा ज्वार आता है।
- पृथ्वी व चन्द्रमा के मध्य औसत दूरी 3, 84, 000 किमी. है।
- सामान्यत: वृहत् एवं निम्न ज्वार के मध्य सात दिन का अंतर होता है।

138. उत्तर (1)

ज्वार के समय पर प्रभाव-
- पृथ्वी की **परिक्रमण** व चंद्रमा की **परिभ्रमण (घूर्णन)** गति ज्वार आने के **समय को बिल्कुल प्रभावित नहीं करती है।**
- चंद्रमा की **परिक्रमण गति जिस अनुपात में बढ़ती है** ज्वार आने के समय में **देरी (विलम्ब) भी उसी अनुपात में बढ़ता है।** जैसे चंद्रमा की परिक्रमण गति दुगुनी करने पर दैनिक ज्वार में देरी 52 मिनट से बढ़कर 104 मिनट (दो गुनी) हो जायेग।
- जिस अनुपात में **पृथ्वी की घूर्णन/परिभ्रमण** गति अधिक होती है **ज्वार आने में देरी भी उसी अनुपात** में हो जाती है अर्थात् पृथ्वी की घूर्णन गति दुगुनी करने पर दैनिक ज्वार आने में देरी आधी (26 मिनट) रह जायेगी तथा पृथ्वी की घूर्णन गति आधी करने पर दैनिक ज्वार आने में देरी दो गुनी (104 मिनट) हो जायेगी।

139. उत्तर (1)

- **धारा (Current) :-**
- जब सागर का जल एक निश्चित सीमा के अन्तर्गत तीव्र गति से आगे की ओर प्रवाहित होता है, तो उसे धारा कहा जाता है। इसकी गति ड्रिफ्ट की तुलना में अधिक होती है।
- महासागरीय धारा को नॉट में मापा जाता है। यह सर्वाधिक शक्तिशाली सतह पर होती है एवं सतह पर गति 5 नॉट एवं गहराई में 0.5 नॉट होती है।
- **गायर या वलय**- महासागरीय धाराओं द्वारा बनाया गया वृत्ताकार क्षेत्र।

140. उत्तर (1)

- बेंगुएला धारा दक्षिणी अटलांटिक महासागर में दक्षिणी अफ्रिका व नामीबिया के पश्चिमी तट पर प्रवाहित होने वाली ठण्डी प्रकृति की धारा है।

141. उत्तर (4)

- मोजाम्बिक धारा दक्षिणी हिन्द महासागर में मोजाम्बिक के पूर्वी तट के सहारे प्रवाहित होने वाली गर्म प्रकृति की धारा।
- फॉकलैण्ड धारा दक्षिणी अटलांटिक महासागर में अर्जेण्टिना के पूर्वी तट पर प्रवाहित होने वाली ठंडी प्रकृति की धारा।
- कैलिफोर्निया धारा उत्तरी प्रशांत महासागर में कैलिफोर्निया के तट के समांतर प्रवाहित होने वाली ठंडी प्रकृति की धारा।
- पेरु/हम्बोल्ट धारा दक्षिणी प्रशांत महासागर में पेरु व चिली के पश्चिमी तट के सहारे प्रवाहित होने वाली ठंडी प्रकृति की धारा।

142. उत्तर (4)

ठण्डी महासागरीय धारा का बहाव क्षेत्र :-
- ठण्डी धाराऐं उच्च अक्षांशों से मध्य एवं निम्न अक्षांशों की ओर आती है तथा ठण्डा जल गर्म क्षेत्रों की ओर लाती है

  निम्न अक्षांशों में - महाद्वीपों के पश्चिमी तट पर

  उच्च अक्षांशों में - महाद्वीपों के पूर्वी तट पर
- ठण्डी महासागरीय धारा के कारण 30 डिग्री से 40 डिग्री आंक्षाशों पर महाद्वीपों के पश्चिमी तट पर मरूस्थल पाये जाते है।

143. उत्तर (3)

- प्राथमिक बल, जो धारा की गति को प्रभावित करता है, वह गुरुत्वाकर्षण बल, कोरियोलिस बल, सौर ऊर्जा से जल का गर्म होना तथा वायु आदि है।

कलाम ACADEMY

144. उत्तर (1)

- केनारी धारा उत्तरी अटलांटिक महासागर में मडेरा से लेकर कैपवर्डे (अफ्रीका के पश्चिमी तट) पर प्रवाहित होने वाली ठंडी प्रकृति की धारा है।
- लेब्राडोर धारा उत्तरी अटलांटिक महासागर में बेफिन की खाड़ी व डेविस जलसंधि से 45° उत्तरी अक्षांश तक प्रवाहित होने वाली ठंडी प्रकृति की धारा है।
- क्येरोशिवो धारा उत्तरी प्रशांत महासागर में जापान के पूर्वी तट के सहारे प्रवाहित होने वाली गर्म प्रकृति की धारा है।
- कैलिफोर्निया धारा उत्तरी प्रशांत महासागर में कैलिफोर्निया के तट के समांतर प्रवाहित होने वाली ठंडी प्रकृति की धारा।

145. उत्तर (4)

- फ्रांस व जर्मनी के बीच राइन नदी की घाटी है जिसमें फ्रांस में वास्पेज तथा जर्मनी में ब्लेक फॉरेस्ट पर्वत श्रेणी है इन दोनों के मध्य राइन नदी बहती है।
- दक्षिणी फ्रांस व स्विट्जरलैण्ड तक आल्पस पर्वत श्रेणी का विस्तार है। फ्रांस व स्वीट्जरलैण्ड के मध्य जूरा पर्वत है। आल्पस का सर्वोच्च शिखर माउण्ट ब्लॉक है।
- आस्ट्रेलिया के पश्चिम में ग्रेट आस्ट्रेलियन मरूस्थल है जिसमें गिवसन, ग्रेट विक्टोरिया, ग्रेट सेण्डी, सिम्पसन व स्टुअर्ट डेजर्ट है।
- अकांकागुआ चोटी दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के अर्जेंटिना में स्थित है जिसकी ऊँचाई 6960 मीटर है।
- गैंग्री हिमानी एशिया महाद्वीप के हिमालयन क्षेत्र में स्थित है।

146. उत्तर (4)

- पृथ्वी का **71 प्रतिशत भाग जल तथा 29 प्रतिशत भाग स्थल** है। जलमण्डल में जल के सभी रूप उपस्थित हैं। इसमें महासागर एवं नदियाँ, झीले, हिमनदियाँ, भूमिगत जल तथा वायुमण्डल की जलवाष्प सभी सम्मिलित हैं।
- पृथ्वी पर पाये जाने वाले जल का 97 प्रतिशत से अधिक भाग महासागरों में पाया जाता है।

नोट: पृथ्वी की सतह का **तीन-चौथाई अर्थात् 7/10 भाग** जल से ढँका अर्थात् महासागरीय भागों से आवृत है।

147. उत्तर (3)

- विश्व में महासागरीय तली में कुल 57 खाइयाँ/गर्त है जिनमें से सर्वाधिक 32 खाइयाँ प्रशांत महासागर में है।
- **मेरियाना खाई**- फिलीपींस के पूर्व में स्थित विश्व की सबसे गहरी खाई (उत्तरी-पश्चिमी प्रशांत), गहराई लगभग 11022 मीटर

148. उत्तर (4)

- अंटार्कटिका पर भारत द्वारा कुछ शोध केन्द्र - 1. दक्षिणी गंगौत्री- 1983 2. मैत्री- 1989 3. भारती- 2012

149. उत्तर (3)

- क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व के महाद्वीपों का व्यवस्थित **अवरोही क्रम- एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अण्टार्कटिका, यूरोप तथा ऑस्ट्रेलिया।**
- एशिया महाद्वीप पृथ्वी के कुल क्षेत्रफल के लगभग 29.8 प्रतिशत अर्थात् लगभग एक-तिहाई भाग पर विस्तृत है।
- आस्ट्रेलिया को द्विपीय महाद्वीप की संज्ञा दी गई है।

150. उत्तर (3)

- आर्कटिक महासागर, प्रशांत महासागर से छिछले जल वाले एक सँकरे भाग से जुड़ा है जिसे **बेरिंग जलसंधि** के नाम से जाना जाता है।

कलाम ACADEMY